Read India

An imprint of Pratham Books

ऋतु की लम्बी चिट्ठी

माला कुमार

हेनू

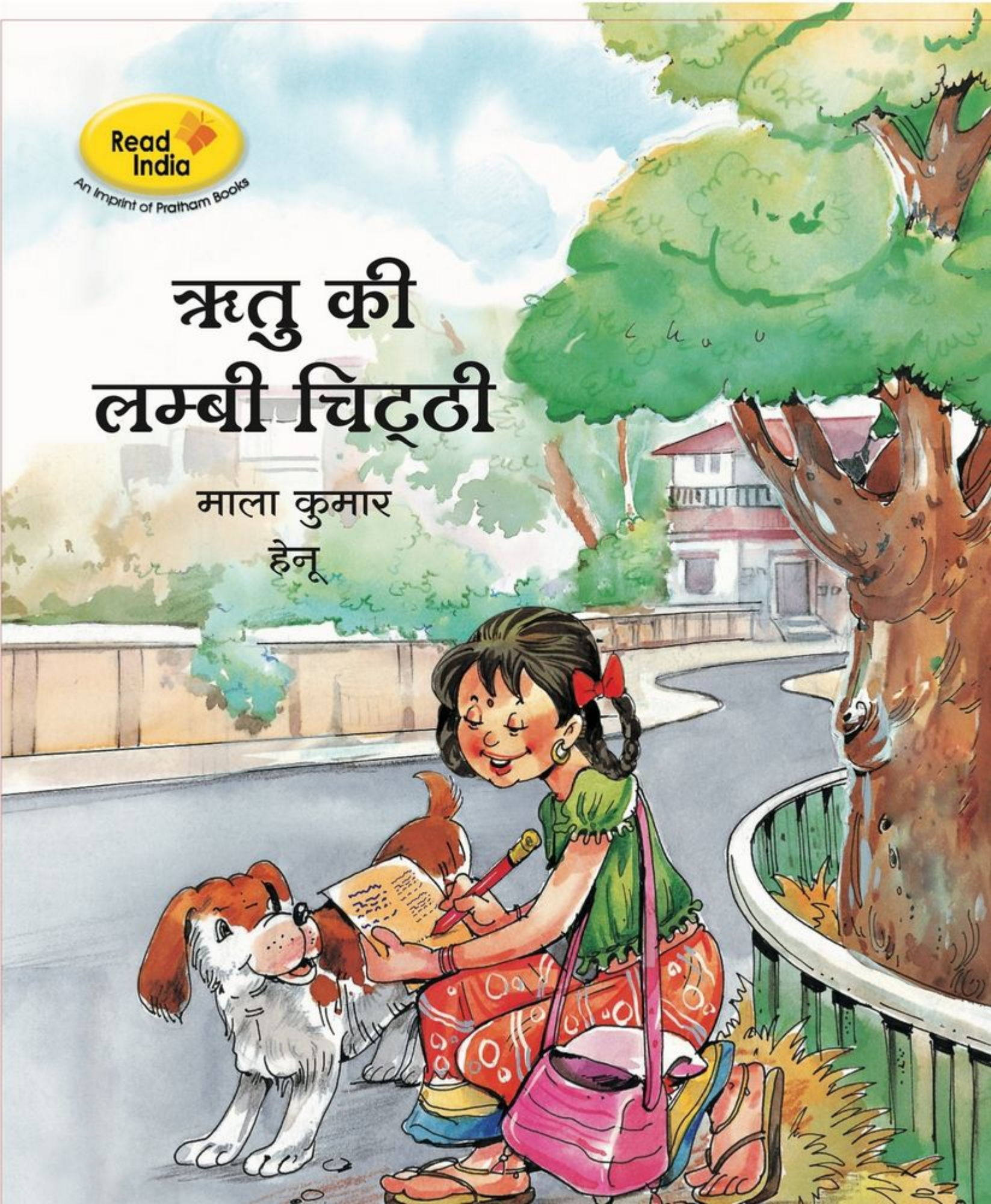

Original Story (*English*)
Ritu's Letter Gets Longer! by Mala Kumar
© Pratham Books, 2010

First Hindi Edition: 2010

Illustrations: Henu
Hindi Translation: Manisha Chaudhry

ISBN: 978-81-8479-196-9

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th "C" Main, 6th 'B' Cross, OMBR Layout,
Banaswadi, Bangalore 560 043
✆ +91 80 25420925

Regional Office:
New Delhi ✆ +91 11 41042483

Typesetting and Layout by:
Pratham Books, Delhi

Printed by :
Manipal Press Ltd., Manipal

.
Published by :
Pratham Books
www.prathambooks.org

Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
http://www.prathambooks.org/cc

ऋतु की लम्बी चिट्ठी

लेखिका :
माला कुमार

चित्रांकन :
हेनू

हिन्दी अनुवाद :
मनीषा चौधरी

दादा जी चिट्ठी लिख रहे थे। ऋतु पास में कुर्सी के सहारे खड़ी थी। ''दादा जी, आपने बुआ को मणि को छुट्टियों में हमारे घर भेजने को कहा है न?''

''हाँ बेटी मैंने तुम्हारी बुआ को लिख भेजा है। देखो, मैं तुम्हें चिट्ठी पढ़ के सुनाता हूँः

'प्रिय पूजा, आशा है तुम सकुशल होगी। मणि की छुट्टियाँ शुरू हो गई होंगी। ऋतु उससे मिलने को बहुत उत्सुक है। उसे तुम यहाँ टुमकुर भेज दो।'''

ऋतु ऊपर नीचे उछली। फिर अपने को रोक नहीं पाई इसलिये कमरे का चक्कर लगाया और दादा जी को बाँहों में घेर लिया।

''तुम अपने आप यह चिट्ठी डालना चाहती हो?'' दादाजी ने पूछा।

ऋतु ने बड़ी-बड़ी आँखें खोलीं, ''अपने आप? सच... मैं डालूँ?''

दे देना।

वह लम्बे वाले जिनकी बड़ी-बड़ी मूँछे हैं? उन्हें जानती हो न?''

''जी दादा जी। वही वाले काका हैं जिन्होंने पिछले साल गर्मियों में मणि को साइकिल चलाना सिखलाया था। क्या वे पूजा बुआ के पास चिट्ठी ले जायेंगे?'' ऋतु ने पूछा।

''नहीं रानी बिटिया। पर चिट्ठी तुम्हारी बुआ को मिल जाएगी।

ऋतु ने अपना छोटा गुलाबी बस्ता थामा और उसमें पोस्ट कार्ड रख दिया। साथ में एक पेंसिल भी। उसे अपने पर बड़ा गर्व हो रहा था। ऋतु अब बड़ी हो गई थी। पर थोड़ा सा डर भी लग रहा था।

कहीं वह बघीरा नाम का कुत्ता उसके पीछे तो नहीं भागेगा?

पर ऋतु चिट्ठी डालने के लिये बहुत ही उत्सुक थी।

कुछ कदम आगे चल कर ऋतु रुकी और उसने चिट्ठी निकाली। वह दादा जी की लिखाई बहुत अच्छे से पढ़ नहीं पाती थी। उसने याद करने की कोशिश करी कि दादा जी ने क्या पढ़ कर सुनाया था। फिर जो शब्द उसे लगा कि 'टुमकुर' था उसके आगे उसने लिखा, 'प्लीज़ ज़रूर'।

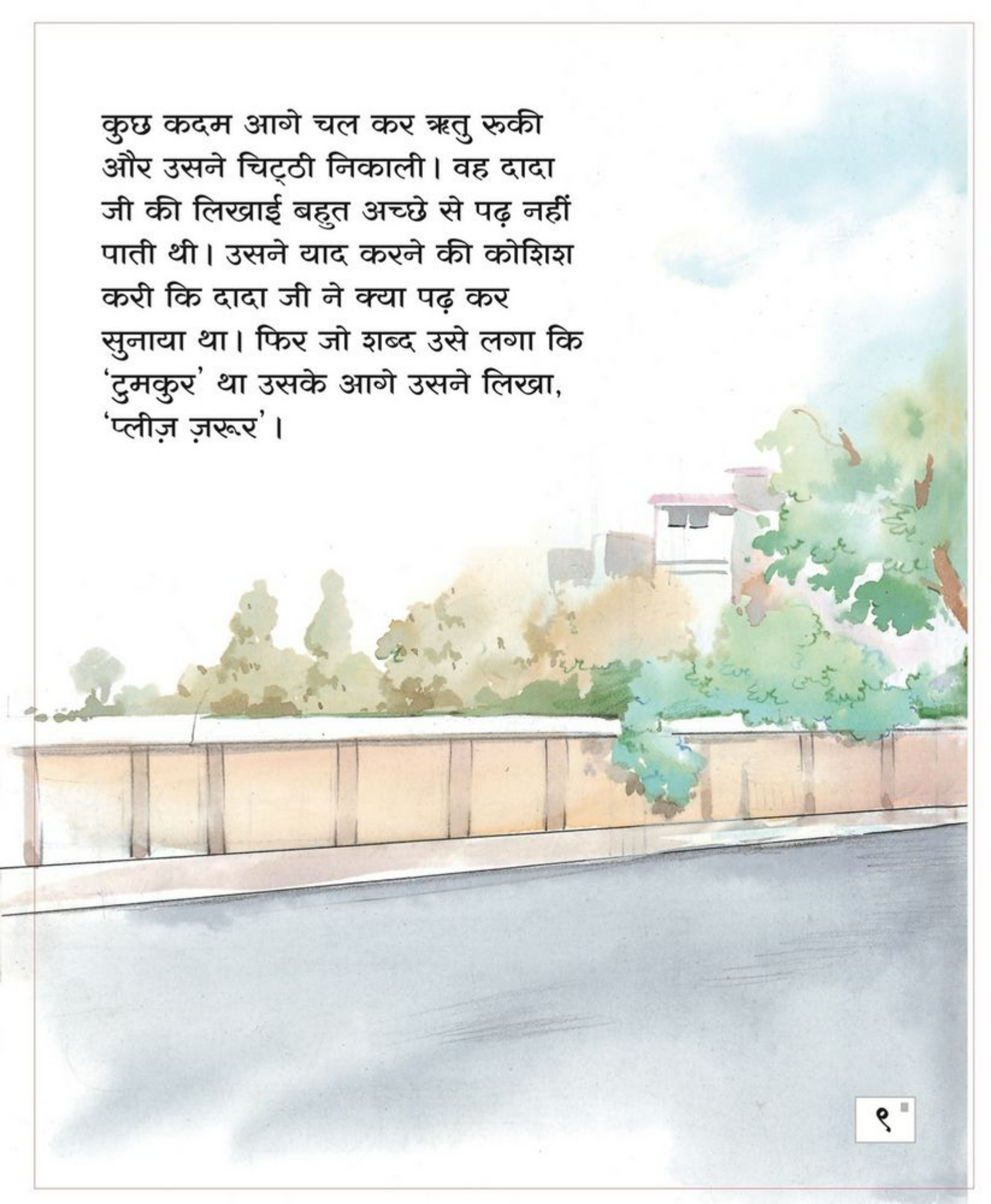

अगले घर तक पहुँच कर वह रुकी और
उसने फिर से पोस्ट कार्ड बाहर निकाला।
क्या पता पूजा बुआ समझेंगी कि नहीं ऋतु
मणि से मिलने को कितनी उत्सुक है?
इसलिये ऋतु ने फिर से पेंसिल निकाली
और लिखा, 'प्ली...ज़ ज़रूर'।

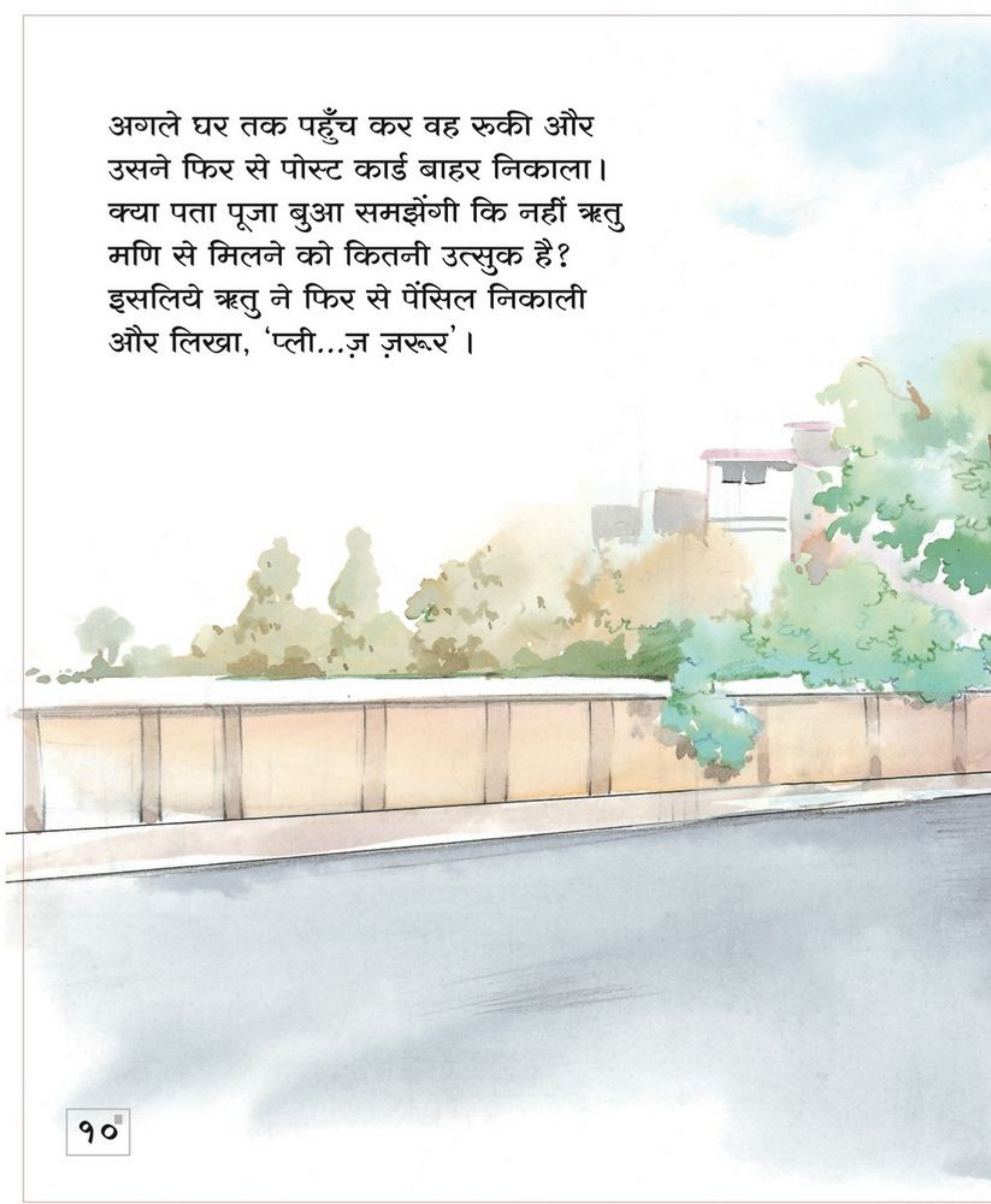

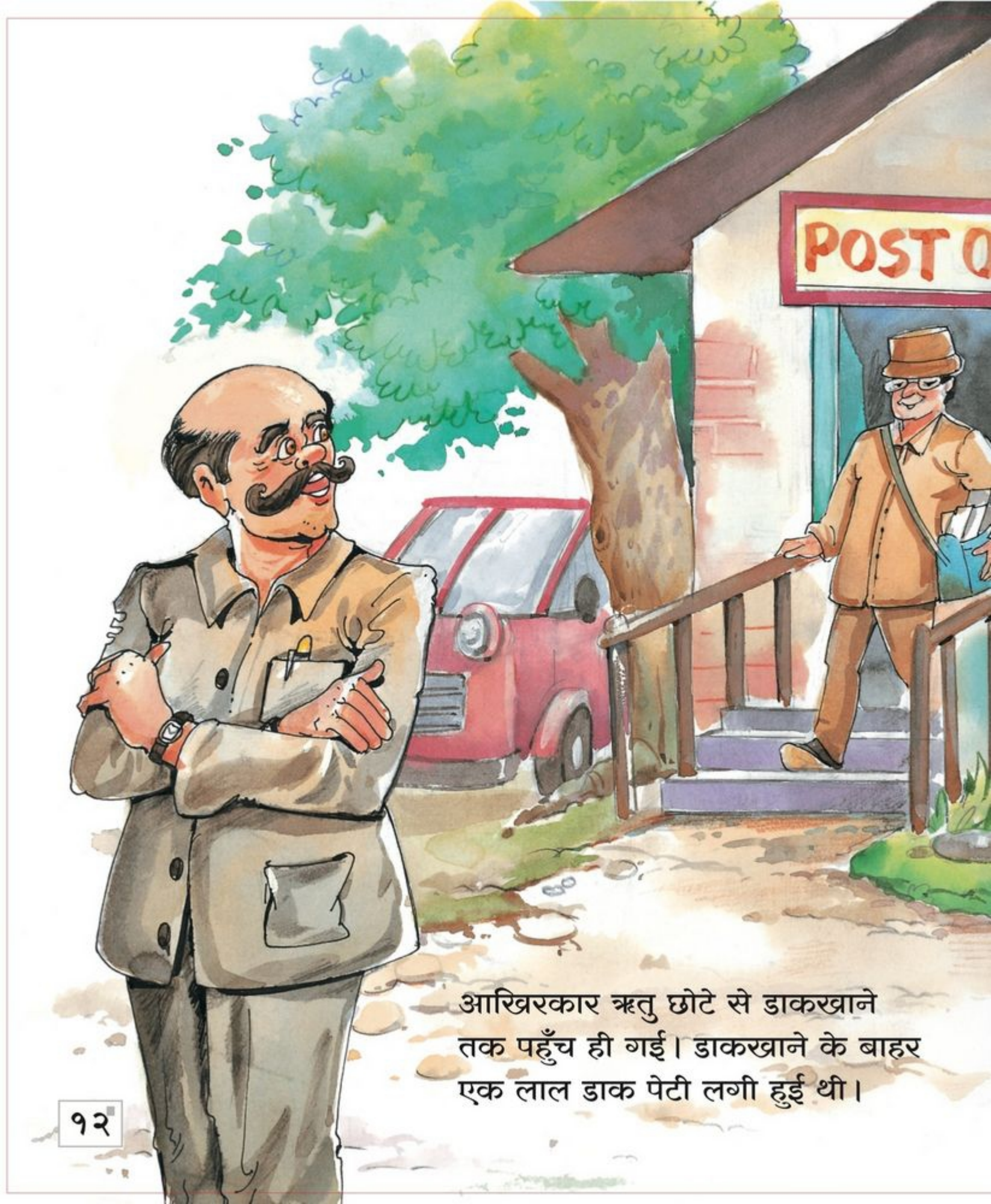

आखिरकार ऋतु छोटे से डाकखाने तक पहुँच ही गई। डाकखाने के बाहर एक लाल डाक पेटी लगी हुई थी।

पंजों के बल खड़े होने पर भी ऋतु
उसके मुँह तक नहीं पहुँच पाई।

वह निडर हो कर रमेश काका की तरफ़ बढ़ी। उन्होंने उससे पोस्ट कार्ड ले लिया और मुस्कराये, ''हमारी ऋतु तो बहुत चतुर है। अब ध्यान से घर की तरफ़ दौड़ जाओ। मैं देखूँगा कि तुम्हारी चिट्ठी बुआ के पास ज़रूर पहुँच जाये।''

पर ऋतु दौड़ी नहीं। उसने देखा कि रमेश काका ने कलम उठा कर कार्ड पर कुछ लिख दिया। फिर उसे डाकिये को पकड़ा दिया जो कि

धम, धम, धम... जब उसने ऋतु की चिट्ठी देखी
तो वह रुक गया। फिर मुस्कराया। कान के पीछे
से पेंसिल निकाली और कार्ड पर कुछ लिख डाला।

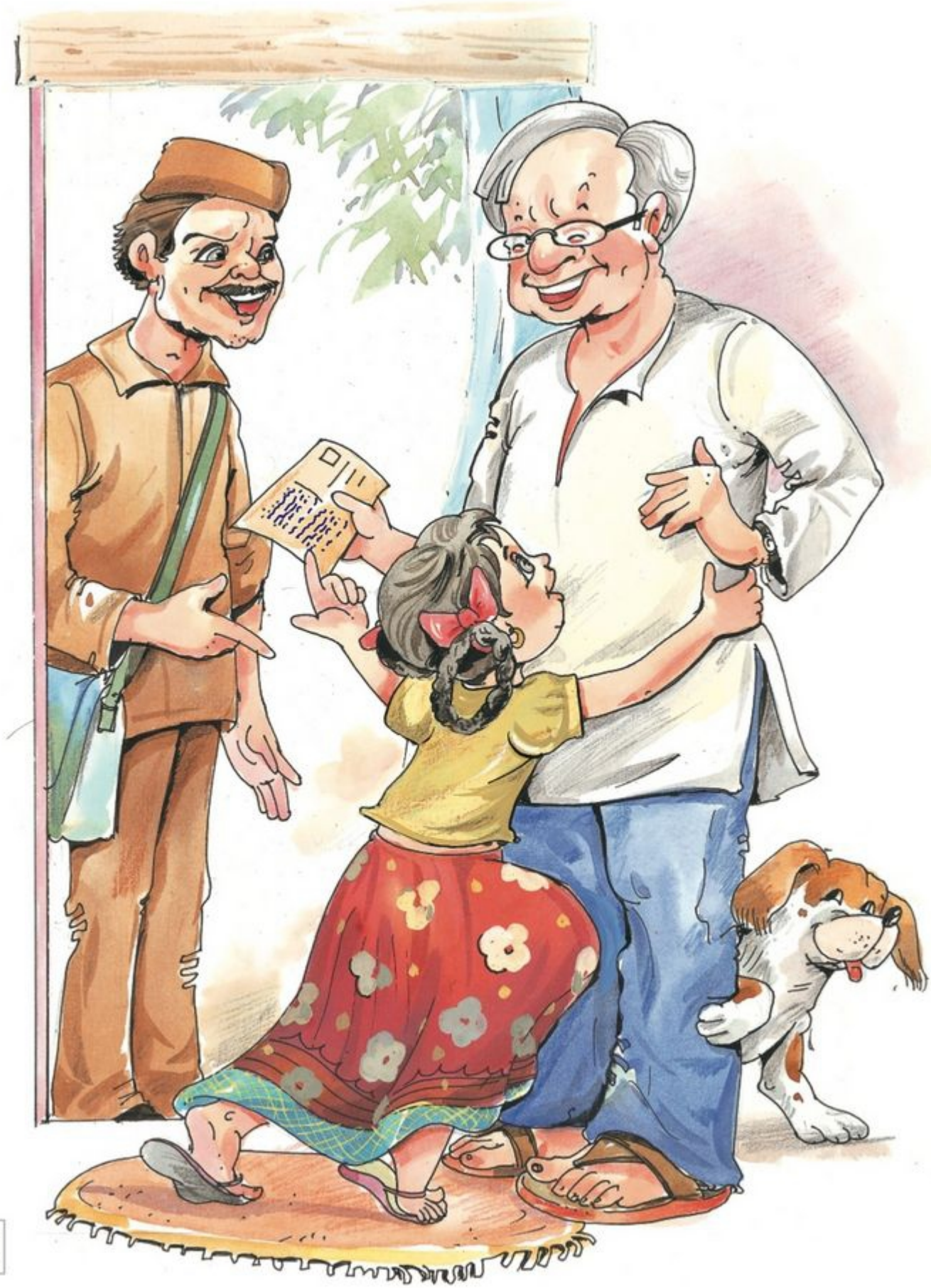

पाँच दिन गुज़र गये। डाकिया दादा जी के लिये एक चिट्ठी लाया। दादा जी पढ़ते हुए मुस्कराने लगे, ''ऋतु, तुम्हारी बुआ ने लिखा है कि वह मणि को परसों यहाँ भेज देंगी। मैं तुम्हें पढ़ कर सुनाता हूँ:

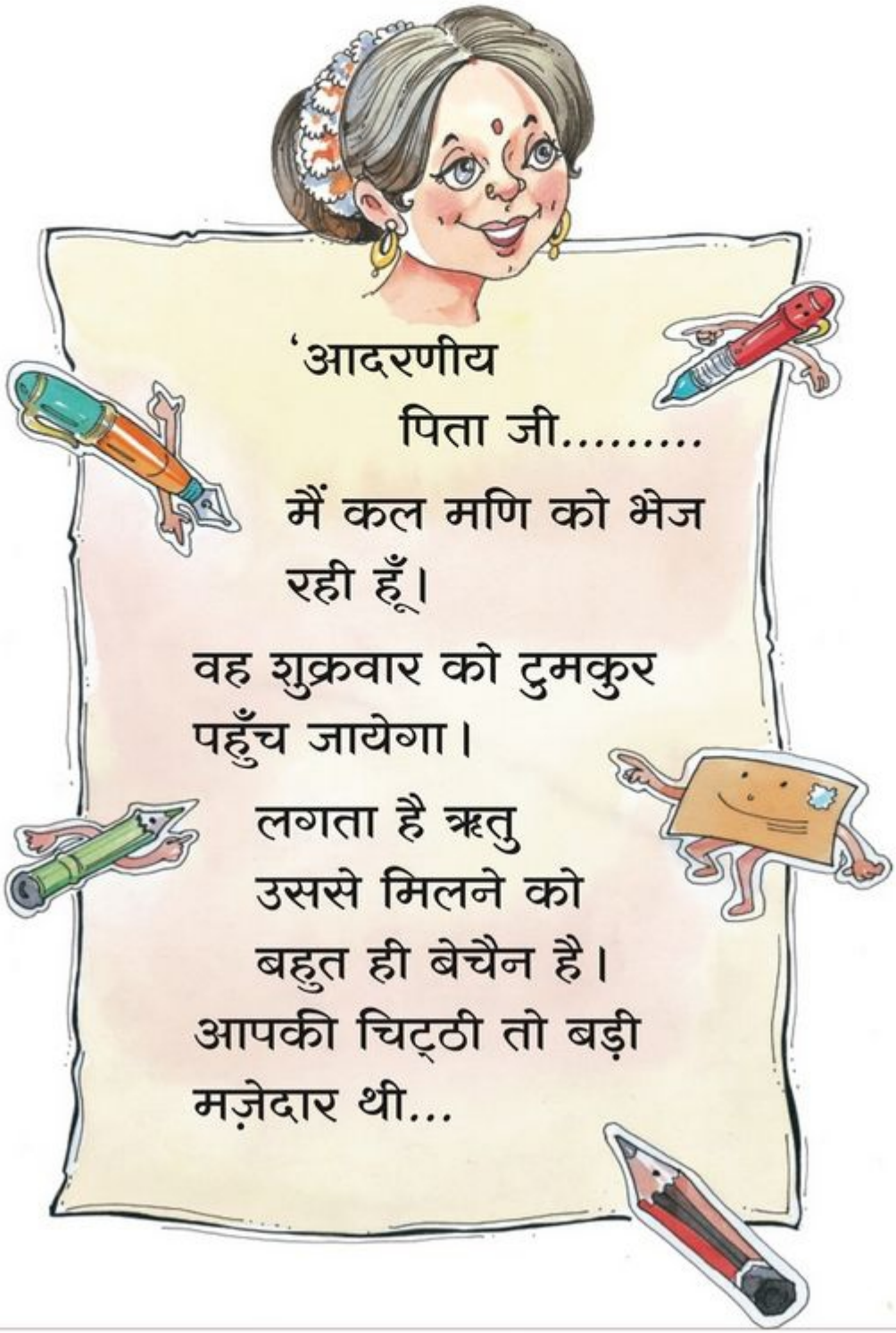

''दादा जी,
मैंने चिट्ठी पर 'प्लीज़ ज़रूर'
लिखा था इसीलिये!''
ऋतु चहक कर बोली।

'आपके पोस्ट कार्ड पर २०
'प्लीज़ ज़रूर।' लिखे हुए थे!'
दादा जी ने आगे पढ़ा।

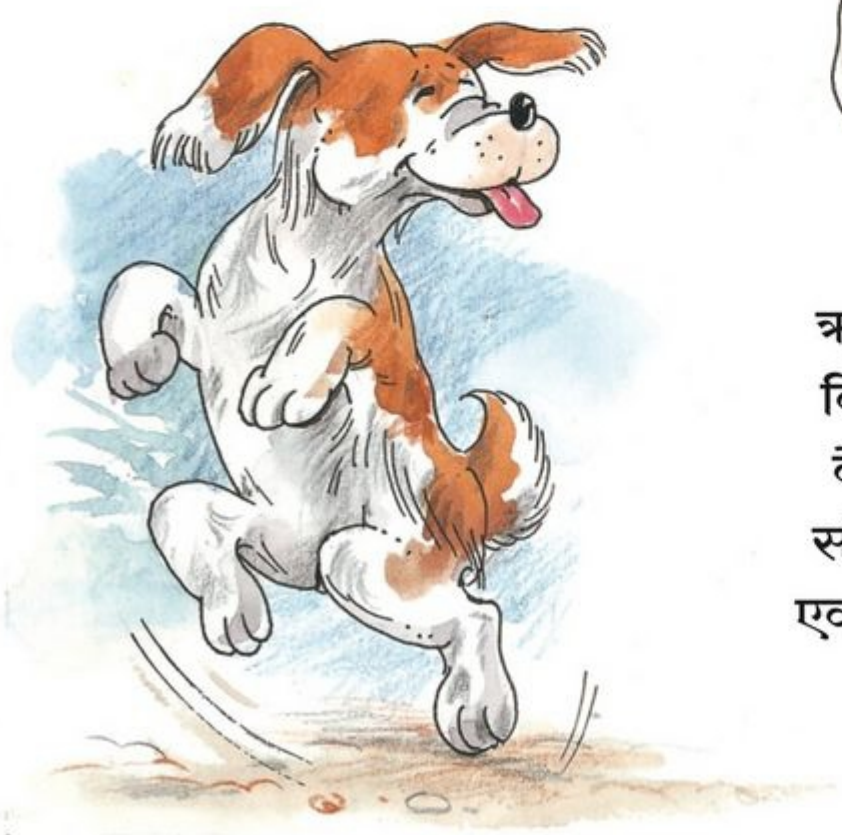

ऋतु के समझ में नहीं आया
कि एक 'प्लीज़ ज़रूर' बीस
कैसे बन गये? वह तो यही
सोच कर खुश थी कि उसने
एक 'प्लीज़ ज़रूर' जोड़ा था।
और फिर एक और!

पीलीज
प्लीस
प्लीज़
प्लीष
प्लीष
प्लीश
पीलीज
पिलीज
प्लीज़
प्लीस

नमस्ते मैं श्रेया हूँ। कैरम खेलने का शौक है मुझे और डॉक्टर बनने की चाह! पढ़ाई में कभी पीछे नहीं रहती हूँ और किताबें बहुत पसन्द हैं।

यह किताब खरीदने के लिये शुक्रिया। आपने यह किताब खरीदी तो मेरे पुस्तकालय में और भी बहुत सी किताबें आयेंगी जिन्हें मैं और मेरे दोस्त पढ़ सकेंगे।

माला कुमार स्वतंत्र पत्रकार व संपादक हैं। वह प्रथम बुक्स व 'हर बच्चे के हाथ किताब' के मिशन से जुड़ी हैं।

हेनू बच्चों के लिए किताबें बनाने में निपुण हैं। वह कहती हैं, ''मेरा मानना है कि सुन्दर चित्र पुस्तकों से बच्चों के अवचेतन मन में दृश्य सौन्दर्य का बोध बढ़ता है और उसके नतीजे बाद में अच्छे ही होते हैं।'' हेनू को सभी माध्यमों में काम करना पसन्द है जिनमें कम्प्यूटर भी शामिल है। चित्रकार बनना उनके लिये स्वाभाविक था पर वह पहली पुस्तक पर काम करने के बाद ही डिज़ाइनर बनीं।

नन्ही ऋतु अपने भाई से
मिलने को बहुत उत्सुक थी।
उसने उसको बुलाने के लिये
एक अनूठी चिट्ठी डाली...

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिये **www.prathambooks.org** पर लॉग आन करें।

हमारी किताबें अंग्रेज़ी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बांग्ला, पंजाबी, उर्दू व ओड़िया में भी उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की बाल पुस्तकें प्रकाशित करने वाली ग़ैर मुनाफ़ा प्रकाशन संस्था है।

ISBN 978-81-8479-196-9

Age Group: 3-6 years
Ritu Ki Lambi Chitthi (Hindi)
MRP: Rs. 25.00